Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

3rd July 2020

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान

स्वामी आर्यवेश जी

के देखरेख में आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना के चुनाव २ अगस्त २०२० रविवार को

Election Notification / 405900

Date : 01-07-2020

Election Notification of

Arya Prathinidhi Sabha A.P.

(United A.P. i.e. A.P. & Telangana States)

Hyderabad, Telangana

(Sabha represents both States A.P. and Telangana)

Reg. No. 6/52 (Old), 1342 (New and amended)

D.No. 4-2-15, Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

सभा के चुनाव की अधिसूचना

दिनांक 2 फरवरी 2020 तथा दिनांक 28 जून 2020 के दिनों में आहूत आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना हैदराबाद (संयुक्त आन्ध्र प्रदेश) की क्रमशः साधारण व अंतरंग सभा के बैठकों में सर्वसम्मति से लिए गए निर्णयानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव 2 अगस्त 2020 रविवार के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 3/5 आसफ़ अली रोड़, नई दिल्ली -२ द्वारा नियत चुनाव अधिकारी के देखरेख में सम्पन्न करवाए जाएंगे । आर्य प्रतिनिधि सभा की देखरेख में जिन आर्य समाजों के चुनाव सम्पन्न हुए हैं तथा उन आर्य समाजों से प्राप्त प्रतिनिधियों के आवेदन पत्र जो 28 जून 2020 की अंतरंग बैठक में स्वीकृत किए गए हैं वे ही प्रतिनिधि चुनाव में भाग ले सकते हैं ।

चुनाव कार्यक्रम निम्न लिखित रहेगा ।

1. **चुनाव की तिथि**	:	**दि. 2-8-2020 रविवार**
2. नामांकन पत्र दाखिल करने का समय	:	प्रातः 10-00 बजे से 12-00 बजे तक
3. नामांकन पत्र जांच करने का समय	:	मध्याह्न 12-10 बजे से 2-00 बजे तक
4. नामांकन पत्र वापस लेने का समय	:	मध्याह्न 2-30 बजे से 4-00 बजे तक
5. आवश्यकता पर मतदान का समय	:	सायंकाल 5-00 बजे से 7-00 बजे तक
6. मतगणना	:	सायंकाल 7-05 बजे से पूर्ण होने तक

मतगणना के बाद परिणाम घोषित किए जाएंगे ।

प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश

मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश

Estd. 1931 Reg. No. 6/52 Fasli (old) 1342/84 (New)

।। ओ३म् ।।

मा निन्दत - निन्दा मत करो (ऋ ४-५-२)

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI
Founder of Arya Samaj

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.
तेलंगाना, हैदराबाद
म.नं. ४-२-१५, महर्षि दयानंद मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०० ०९५.

ARYA PRATINIDHI SABHA A.P.
TELANGANA, HYDERABAD

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.
తెలంగాణ, హైదరాబాద్

Election Notivication / 405900 తేది : 01-07-2020

Election Notification of
Arya Prathinidhi Sabha A.P.

(United A.P. i.e. A.P. & Telangana States)
Hyderabad, Telangana
(Sabha represents both States A.P. and Telangana)
Reg. No. 6/52 (Old), 1342 (New and amended)
D.No. 4-2-15, Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. (సంయుక్త ఆంధ్ర ప్రదేశము అనగా ఆంధ్ర మరియు తెలంగాణ ప్రాంతము) యొక్క ఎన్నికల నొటిఫికేషన్

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. (సంయుక్త ఆంధ్ర ప్రదేశము అనగా ఆంధ్ర మరియు తెలంగాణ ప్రాంతము) యొక్క సర్వసభ్య సమావేశము మరియు అంతరంగ సమావేశము క్రమశః 2వ ఫిబ్రవరి 2020 మరియు 28 జూన్ 2020 నాడు నిర్వహించి సర్వసమ్మతముగా తీసుకోబడిన నిర్ణయానుసారము ఆర్య ప్రతనిధి సభ యొక్క ఎన్నికలను 2వ ఆగస్టు 2020 ఆదివారము నాడు సార్వదేశిక్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ 3/5, ఆసఫ్అలి రోడ్, కొత్త ఢిల్లీ వారిచే నిర్ణయింపబడిన ఎన్నికల అధికారి ఆధ్వర్యంలో నిర్వహించుటకు నిర్ణయించనైనది కావున సభ ఎన్నికలు 2వ ఆగస్టు 2020 ఆదివారము నాడు జరుగును. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆధ్వర్యంలో ఆర్య సమాజాల యొక్క ఎన్నికలు నిర్వహింపబడి, సమాజాల ద్వార పంపించిన ప్రతినిధి ఫారాలను, సభ యొక్క 28 జూన్ 2020 నాడు నిర్వహించిన అంతరంగ సమావేశంలో ఆమోదింపబడిన ప్రతినిధులు ఈ ఎన్నికలో పాల్గొనవచ్చును.

ఎన్నికల కార్యక్రమ వివరణ :

1. ఎన్నికల తేది	:	ఆదివారము 2-8-2020
2. నామినేషన్ పత్రాలు దాఖలు చేయు సమయం	:	ఉ॥ 10-00 నుండి మ॥ 12-00 వరకు
3. స్క్రూటిని సమయం	:	మ॥ 11-10 నుండి 2-00 వరకు
4. విథ్‌డ్రాల్ సమయం	:	మ॥ 2-30 నుండి సా॥ 4-30 వరకు
5. పోలింగ్ సమయం	:	సా॥ 5-00 నుండి 7-00 వరకు
6. కౌంటింగ్	:	సా॥ 7-00 నుండి

కౌంటింగ్ తర్వాత ఎన్నికల ఫలితాలు వెల్లడించబడును.

అధ్యక్షులు
ఆర్యప్రతిని సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ

కార్యదర్శి
ఆర్యప్రతిని సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ

Door No. 4-2-15, Maharshi Daanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad-500 095.
Phone No. 040-66758707, 24753827, 24756983
Email : acharyavithal@gmail.com Cell : 09849560691

पं गंगाप्रसाद उपाध्याय और डा अम्बेडकर

-आचार्य करण सिंह नोएडा

श्री पंडित गंगा प्रसाद जी उपाध्याय (१८८१-१९६८) ने डह्क्टर अंबेडकर जी को विद्वान, तर्कशील, उत्तम लेखक तथा वक्ता स्वीकार करते हुए लिखा है- ''श्री अंबेडकर जी को प्रथम शरण तो आज समाज में ही मिली थी। ''आर्य समाज में दलितों का प्रवेश ५० वर्षो से चला आया था। महादेव गोविंद रानाडे सोशल कान्फ्रेंस में अधिकतर आर्य समाजियो का सहयोग रहता था। आर्य नेता तथा सहस्त्रो आर्य समाजी दलित उद्धार में लगे हुए थे। भेद केवल उद्योग और साफल्य की यात्रा का था। श्री अंबेडकर जी स्वभाव से हथेली पर सरसों जमाने वाले व्यक्तियों में से हैं। उनको मनचाही चीज तुरंत मिले, अन्यथा वह दल परिवर्तन कर देते हैं। इस धारणा के बाद भी आर्य विद्वान पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय जी माननीय डह्क्टर अंबेडकर जी द्वारा प्रस्तुत हिंदू कोड बिल के पक्षधर थे। बात उस समय की है जब गंगा प्रसाद उपाध्याय जी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान (१९४१-१९४७) तक थे। तब काशी के कुछ पंडितों ने आर्य समाज इलाहाबाद चौक पधार कर उनसे कहा, विदेशी सरकार हिंदुओं के धर्म को भ्रष्ट करने के लिए हिंदू कोड बिल पास करना चाहती है। आर्य समाज हिंदू संस्कृति का रक्षक रहा है।हम चाहते हैं इसके विरुद्ध एक प्रबल आंदोलन चलाया जाए और आर्य समाज की संस्कृति की युद्ध में हमारा पूरा सहयोग करें।

'काशी के पंडितों के उपरोक्त अनुरोध को सुनकर उपाध्याय जी ने कहा जब तक मैं 'बिल' का पूरा अध्ययन करना और अपने मित्रों से बिल के गुण-दोषों परामर्श नव न कर लू, मेरे लिए यह कहना कठिन होगा कि आर्य समाज आपको कहां तक सहयोग दे सकेगा ? शायद आर्य समाज इस दृष्टिकोण से आपसे सहमत न हो, क्योंकि आर्य समाज एक सुधारक संस्था है और हिंदू पंडितों की सदैव से एक मनोवृति रही है, वह यह कि सुधार के काम में रोड़ा अटकाना। हिंदू समाज मरणासन्न हो रहा है। आप स्वयं चिकित्सा का उपाय नहीं सोचते और दूसरों को रोगी के समीप तक फटकने नहीं देते। आर्य समाज को अपने जन्म से अब तक यही कटु अनुभव हुआ है। बाल-विवाह निषेध (१९२९) के कानून में आप ने विरोध किया। अनुमति कानून (consentbil) जैसे अत्यावश्यक कानून के पास होते समय भी यही आवाज आई कि विदेशियों और विधर्मियो को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं, आर्य समाज अपने सुधार में हर एक उचित साधन का प्रयोग करता रहा और एक अंश में आप भी विदेशी सरकार से पीछा नहीं छुड़ा सके। आप अपनी आत्मरक्षा के लिए विदेशी सरकार की कचहरियो, पुलिस सेवा आदि का प्रयोग करते रहे हैं।

हिंदू कोड बिल का अध्ययन करने के उपरांत पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय जी इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे। कि हिंदू कोड बिल का विरोध बिना सोचे समझे सनातन धर्म के ठेकेदारों को की ओर से खड़ा किया गया है।

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने प्रधान पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति (१८८९-१९६०) और मंत्री पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय जी हिंदू कोड बिल के अनुकूल होने के बावजूद केवल बहुमत के आधार पर सामूहिक रूप से हिंदू कोड बिल का विरोध करने का निर्णय लिया था।

'सार्वदेशिक सभा के उपरोक्त निर्णय पर असंतोष व्यक्त करते हुए भी। उपाध्याय जी नै लिखा था। आर्य समाज ने यह विरोध करके अपना नाम बदनाम कर लिया। अब इस संदर्भ में आर्य समाज का नाम सुधारक संस्थाओं की सूची से काट दियाजाएगा।अधिकांश आर्य समाजियो ने भी सनातनियो का साथ देकर उनके ही सुर में सुर मिलाया,जो मेरे विचार से सर्वथा अनुचित,निरर्थक तथा आर्य समाज की उन्नति के लिए घातक था।

'उपाध्याय जी की दृष्टि में हिंदू कोड बिल पौराणिक और वैदिक धर्म के बीच एक ऐसी चीज है जो आर्य समाज के अधिक निकट और पौराणिकता से अधिक दूर है, अर्थात् इस का झुकाव आर्य समाज की ओर है। आर्य समाज को इस की सहायता करनी चाहिए थी, उसने इसका विरोध करके पौराणिक कथाओं को जीवित रखने में सहायता दी।

'श्री उपाध्यायजी कायह मंतव्य था कि-चाहे फल कुछ भी हो आर्य समाज को किसी अवस्था में भी सुधार के विरोधियों का साथ देकर सुधार विरोधी नी मनोवृत्ति को

POST-COVID

RELIGION MUST BE GOD-CENTRED AND PRIEST-FREE

-स्वामी अग्निवेश, वाल्सन थम्पु

Worship must be to spiritual life what breathing is to physical life. Just as there are no middlemen in our breathing-- except the deadly middleman of pollution--in the spiritual breathing of worship too, there must be no middlemen.

Written by Swami Agnivesh , Valson Thampu Updated: June 30, 2020 9:18:33 am

Misusing faith, religious establishments and the priestly class distorted religious culture and made the life of religious communities centred not on God, but places of worship.

We are living, said Pope Francis, not so much in an era of change as in a change of era. The COVID-19 pandemic is a watershed moment in history. The present disarray, destruction and suffering are the birthing pangs of a new era. We hear the footfalls of the departing gods fading behind us, even if we don't see the footprints of the incoming gods in front of us.

The brunt of this transition falls on religions because they thrive on the past. All religions claim to be inheritors of exclusive spiritual legacies, which they treat as closed systems. They hold zealously to the letter and litter of it, even though the world around them has changed beyond recognition. As a result, religions remain enclaves of regression in an ever-changing world.

This results from the supremacy that religions attach to "faith". Faith is pitted against reason. Surely, this cannot be faith in God; for God is Supreme Reason. It is faith in the religious establishment and its agendas. This specious faith is used to suppress in human beings the divine attributes of love, truth, justice and compassion. This goes against the grain of scriptures. For that reason, the light of scriptures is kept hidden from believers. Historically, it was the priestly class that exalted faith above the attributes of God. This had the effect of the dethroning of God.

Opinion Resetting civilisation in post-Covid-19 world Misusing faith,

religious establishments and the priestly class distorted religious culture and made the life of religious communities centred not on God, but places of worship. To hide the irrationality this entailed, they distorted the idea of God. Consequently, the omnipresent God became a local deity who stays tamely confined within the narrow radius of priestly interests and sleights of hand. God was turned into an alibi for fragmenting humankind, and an excuse for spreading communal poison. God of love became God of hate. God of truth became God of untruth. God of light became God of darkness. It looks as though the COVID pandemic has come to emancipate us from this subhuman religiosity. The virus has freed us from our addiction to priestly potions in temples, churches, and mosques. The fact that the rupture in people's addiction to places of worship is enabling many to recognise the superfluity of priest-manipulated, temple-centred religiosity, is troubling the priestly class as a whole. It is now fairly clear that religiosity of this kind was not for the sake of the people, but people were being used for the profit of religious establishments.

Unlike love, which is universal, faith is inherently parochial. Faith is exclusive to religious groups. Zeal for one's faith breeds hate and hostility to the faiths of others. It is this naiveté that custodians of religions breed and exploit to deadly effect.

The priestly class can be trusted to import their agenda into the post-COVID era. It is in the interest of humanity that they be not allowed to do this. A new age needs a new spiritual vision. That vision has to be informed by the godly attributes of love, truth, justice and compassion. The priestly class has no use for these values. They are incompatible with priestly interests. The new world cannot live on their regressive menu from the past. It is spirituality, not religion, that humankind in the new world needs.

Opinion Social distancing is antithetical to festivals, but it is the only way

The virus has undermined every aspect of priest-driven religiosity. Temples, mosques and churches are

'दुष्ट व्यक्ति विद्वान भी हो तब भी उसका संग नहीं करना चाहिये'

–मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक साहित्य में वेद से इतर ऋषियों व विद्वानों के अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनमें जीवन को अपने लक्ष्य आनन्द व मोक्ष तक पहुंचाने के लिये उत्तम विचार व शिक्षायें दी गई हैं। ऐसी ही एक शिक्षा है कि मनुष्य को दुष्ट व्यक्तियों की संगति नहीं करनी चाहिये। इसका परिणाम यह होता है कि सज्जन मनुष्य की सज्जनता व शुभगणों में प्रवृत्ति कम होकर दुष्ट व्यक्ति के अवगुण उसमें आ जाते हैं। दुष्ट व्यक्तियों की संगति से दुष्ट व्यक्तियों के जीवन के दुर्गुण सज्जन मनुष्यों के स्वभाव व व्यवहार में भी आ जाते हैं। जो मनुष्य वैदिक साहित्य के स्वाध्याय से दूर हैं तथा जो विद्वानों व सत्पुरुषों की संगति नहीं करते उनमें लोभ, काम, परिग्रह, दुष्ट इच्छाओं का आ जाना सम्भव होता है। स्वाध्याय तथा सत्पुरुषों की संगति सहित सन्ध्या एवं यज्ञ आदि आवश्यक नियमों का पालन करने से मनुष्य के जीवन व चरित्र का निर्माण होता है। इससे मनुष्य अनेक बुराईयों से बच जाते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि अनेक बुरे लोगों ने सत्पुरुषों के प्रभाव से अपनी बुराईयों को छोड़ दिया। इसके दो उदहारण हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

एक बार एक स्थान का प्रसिद्ध डाकू अपने साथियों के साथ एक स्थान पर डाका डालने गया। जिस घर में डाका डालना था उसी से सटा हुआ एक मन्दिर था जहां कर्म-फल व्यवस्था पर व्याख्यान हो रहा था। डाकू मन्दिर में कुछ स्थानों पर छुप कर बैठ गये। वहां से वह डाका डालने वाले धनवान के घर की निगरानी कर रहे थे। संयोगवश डाकुओं के सरदार के कानों में वहां हो रहे व्याख्यान के शब्द पड़ रहे थे। व्याख्यान में वक्ता कह रहे थे मनुष्य जो भी शुभ व अशुभ कर्म करता है उसे उसका फल इस जन्म या परजन्म में अवश्य ही भोगना पड़ता है। वह उस कर्म के फल को बिना भोगे उसके बन्धन से मुक्त नहीं होता। डाकू के कान में यह शब्द पड़े तो इन शब्दों को सुनकर वह अपने कर्मों के बारे में विचार करने लगा। उसने अपने साथियों को उसके अगले संकेत तक योजना के अनुसार कोई कार्य न करने को कहा। अब वह व्याख्यान सुन रहे श्रोताओं के मध्य आ कर बैठ गया। सत्संग में जो लोग बैठ थे वह उसे देख डर कर भागने लगे। सभी लोग उस डाकू को पहचानते थे। एक समय आया कि वक्ता व डाकू ही वहां रहे। व्याख्यान समाप्त होने पर डाकू ने वक्ता से प्रश्न किया कि यदि कोई व्यक्ति अच्छे व कुछ बुरे काम करता है तो क्या उसके बुरे कर्म उसके अच्छे कर्मों में समायोजित होते हैं अथवा नहीं ? वक्ता ने तर्कयुक्त उत्तर देते हुए कहा शुभ कर्मों का फल अलग से और पाप कर्मों का फल अलग से मिलता है। डाकू को वक्ता की बातें तर्कसंगत लगी। उसने उस दिन की डाका डालने की योजना स्थगित कर दी। उसके बाद उसने डाके न डालने का निर्णय किया और स्वयं एक साधु की तरह सज्जन पुरुष का जीवन व्यतीत करने लगा। यह व्याख्यान व सज्जन पुरुष की संगति का प्रभाव था। ऐसे अनेक उदाहरण और भी हैं।

ऋषि दयानन्द (१८२५-१८८३) ने अविभाजित पंजाब सहित पूरे देश में वैदिक धर्म का प्रचार किया था। जब वह प्रचार करते हुए पंजाब के झेलम नगर में पहुंचे थे तो वहां उनके व्याख्यान सुनने एक गीतकार, गायक, संगीतज्ञ अमीचन्द जी भी पहुंचे थे। अमीचन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी से अनुरोध किया कि वह एक भजन प्रस्तुत करना चाहते हैं। स्वामी जी ने उनका आग्रह स्वीकार किया और अमीचन्द जी को श्रोताओं को अपना भजन सुनाने का अवसर दिया। अमीचन्द जी का कण्ठ माधुर्य से युक्त था तथा उनके द्वारा प्रस्तुत रचना के शब्द प्रभावशाली थे। भजन की समाप्ति के बाद स्वामीजी ने उनके भजन की प्रशंसा की। स्वामी जी के व्याख्यान के बाद आयोजकों ने स्वामी दयानन्द को अमीचन्द के व्यक्तिगत दुर्गुणों से परिचित कराया। दूसरे दिन अमीचन्द जी व्याख्यान सुनने समय से बहुत पहले पहुंच गये। आज पुनः अमीचन्द जी ने ऋषि दयानन्द को भजन सुनाने के लिये अवसर देने का अनुरोध किया। ऋषि ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया। अमीचन्द जी ने भजन सुनाया। भजन के बाद स्वामी जी ने अमीचन्द जी के भजन की भूरि भूरि प्रंशसा की और अन्त में कहा कि 'अमीचन्द! तुम हो तो हीरे, किन्तु कीचड़ में पड़े हुए हो।' यह शब्द सुनकर अमीचन्द जी पर जादू का सा प्रभाव हुआ। वह बोले महाराज! आज के बाद आपको अपना मुंह तभी दिखाऊंगा जब कीचड़ से बाहर आ जाऊंगा। इसके बाद उनका जीवन कीचड़ से पूर्णतः बाहर निकल गया। वह उसके बाद

आर्यसमाज के प्रथम प्रभावशाली और अनेक शास्त्रीय भजनों के रचनाकर व गायक के रूप में प्रसिद्ध हुए जिनको आज भी देश विदेश में गाया जाता है। यह परिवर्तन भी सत्संगति का परिणाम था। उनके उत्तरवर्ती सभी भजनोपदेशकों के लिए उनका जीवन अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक है। अमीचन्द जी के जीवन में यह परिवर्तन ऋषि दयानन्द जी की संगति के कारण आया। यदि वह उस दिन सत्संग में न जाते तो उनके जीवन में यह क्रान्तिकारी परिवर्तन न आता। पहले उन्हें ऋषि दयानन्द जैसा साधु पुरुष मिला नहीं था जिससे वह कुसंगति में फंसकर दुर्व्यसनों से ग्रस्त् हो गये जिससे उनका पारिवारिक जीवन भी बर्बाद हो गया था। इस घटना के बाद सभी बिगड़ी बातें सुधर गईं। हम अनुभव करते हैं कि यदि कोई बन्धु ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र और उनके सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों को पढ़े ले तो उसके जीवन का अमीचन्द जी की भांति सुधार हो सकता है और वह लोहे से कुन्दन बन सकता है।

मनुष्य के अन्दर दुष्टता एवं अन्य दुर्गुण संगति के कारण ही आते हैं। जो मनुष्य ईश्वर की सन्ध्या-उपासना करता है तथा सज्जन व विद्वानों की संगति करता है, उसके अन्दर ईश्वर व उन सज्जन विद्वानों के सदृश गुण आते हैं। वैदिक धर्म में प्रतिदिन दैनिक अग्निहोत्र करने का विधान है। अग्निहोत्र को यज्ञ कहते हैं। यज्ञ करने से देवपूजा, संगतिकरण एवं दान आदि गुणों का सम्मिलित लाभ इसके करने वालों को प्राप्त होता है। अग्निहोत्र करने से जीवन अग्नि के समान पापों से रहित तथा तेजस्वी बनता है। यज्ञ में पुरोहित एवं अन्य विद्वानों की उपस्थिति से उनसे संगतिकरण होता है जिससे उनके धार्मिक विचार सुनने को मिलते हैं। यह धार्मिक विचार हमारे जीवन के दोषों को दूर करते हैं और हमें सज्जन व साधु मनुष्य बनाते हैं। दान करने से सुपात्रों को लाभ होता है जिसका फल परमात्मा कई गुणा दान करने वालों को भी देता है। शुभगुणों का दान भी महत्वपूर्ण है। इससे दूसरों को तो लाभ होता ही है, दानी मनुष्य को भी कर्म के अनुसार फल तथा आत्मसन्तोष का अनुभव होता है। सन्ध्या, अग्निहोत्र-यज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ तथा बलिवैश्वदेवयज्ञ सहित वेदज्ञान एवं वैदिक सत्साहित्य के स्वाध्याय के कारण ही वैदिक धर्म एवं संस्कृति विश्व की महानतम संस्कृति है। वैदिक धर्म में सज्जन पुरुष औरों से अधिक पाये जाते हैं, यह हमारा निजी अनुभव है। जैसा गुरु होता है वैसा ही चेला होता है। इस कहावत के अनुसार वैदिक धर्मी राम, कृष्ण, ऋषियों, योगियों, ऋषि दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के गुणों वाले होते हैं।

हमारे देश के अनेक महापुरुषों ने दुष्ट व्यक्तियों के सम्बन्ध में हमें सावधान किया है। महाराज भृतहरि ने लिखा है कि 'दुष्ट मनुष्य यदि विद्वान हो तो भी उसके संग से बचना चाहिए। क्या मणिवाला सर्प जहरीला नहीं होता?' आचार्य चाणक्य ने कहा है 'दुष्ट मनुष्यों को रास्ते पर लाने के केवल दो ही उपाय हैं। या तो जूते से उनका मुंह तोड़ दिया जाय अथवा उनकी अवहेलना कर दी जाये।' एक अन्य स्थान पर आचार्य चाणक्य ने कहा है 'दुष्ट व्यक्ति के तीन लक्षण होते हैं, उसका मुख कमल के समान सुन्दर दिखाई देता है और वाणी चन्दन के समान शीतल लगती है परन्तु उसका हृदय कैंची के समान तेज होता है।' कुमार-संभव ने लिखा है कि 'दुष्ट लोगों को महान व्यक्तियों के कार्य अच्छे नहीं लगते, इसलिए वे उनसे द्वेष करते हैं।' आर्यसमाज का सातवां नियम है 'सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य (सज्जनों के सज्जनता तथा दुष्टों के साथ दुष्टता का) व्यवहार करना चाहिये।'

ऋषि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ यथा नाम तथा गुण एवं विश्वविख्यात ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में उन्होंने मनुष्य की परिभाषा दी है। यहां अन्यायकारी बलवान एवं अधर्मी शब्दों का प्रयोग दुष्ट व्यक्तियों के लिये ही किया गया है। उनके वचन हैं 'मनुष्य उसी को कहना (अर्थात् मनुष्य वही है) कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं, कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उन की रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उस का नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उस (मनुष्य) को कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जायें परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवें।'

इस लेख को लिखने का हमारा प्रयोजन यह बताना है कि हमें दुष्ट प्रवृत्तियों के लोगों से कदापि मित्रता व संगति नहीं करनी चाहिये। यदि करेंगे तो इसके दुष्परिणाम हमें प्राप्त होंगे। इसके स्थान पर हमें यथासम्भव सज्जन, सच्चे धार्मिक तथा विद्वान लोगों की ही संगति व मित्रता करनी चाहिये। इससे जीवन में बहुत लाभ होता है। सद्ग्रन्थ भी हमारे सच्चे मित्रों के समान होते हैं। अतः हमें वेद सहित सत्यार्थप्रकाश, उपनिषद, दर्शन, विशुद्ध मनुस्मृति, शुद्ध रामायण एवं शुद्ध महाभारत आदि सद्ग्रन्थों का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। इससे हमारा यह लोक एवं परलोक सुधरेगा। ओ३म् शम

'डॉ. मुमुक्षु आर्य जी जैसे महान, प्रेरणादायक, देव पुरूष पर मेरी व्यक्तिगत विचार और समिक्षा।'

'व्यक्तिगत चिंतन-'

मै २०१४ से ही Facebook और WhatsApp के माध्यम से **डॉ.** मुमुक्षु से जुडा हू और पिछले ६ साल से उनके व्यक्तित्व से मै बहुत प्रभावित हू। एक बार मेरे आर्य जगत् समूग मे मैने लेख लिखा था पौराणिक पंडित और उनके कर्मकांड आदि पर तो **डॉ.** आर्य ने मेरे अशुद्ध लेख को शुद्ध कर पोस्ट कर अपनी तीव्रता दिखाते हुए मुझे अपना परिचय दिया उसी दिन मै इमसे बहुत प्रभावित हुआ क्योकि यह व्यक्तिगत रूप से भी बहुत कोमल ह्रदय वाले है, उस दिन से अब तक इनकी प्रभावशाली लेखन शैली अब पढ़ता और देखता आ रहा हू। क्योकि **डॉ.** आर्य केवल आर्य समाजी ही नही है, सही मायने मे ऋषि दयानंद के उद्दोश्यो को साकार करने और दिन रात उसी चिंतन लेखन करने मे अपनी ऊर्जा और धन आदि व्यय करने मे सबसे ईमानदार आर्य समाजी विद्वानो मे सबसे आगे रहने वाले देव पुरूष है। इनकी विशेषता यह है कि ह्रदय रोग विशेषज्ञ होने मतलब आधुनिक साईंस से जुडे वाले वाले अधिकतर लोग विज्ञान को ही सर्वप्रथम रखते वाले होते है और नास्तिक होते है। लेकिन डह. आर्य जी पौराणिक परिवार से होने के बावजूद ऋषि दयानंद और आर्य समाज से तब प्रभावित हुए जब कोई इनके कलीनिक मे कोई इनको सत्यार्थ प्रकाश देकर चला गया। जिसे न चाहते हुए पढ़ लिया और इनका जीवन बदल गया और यह अपने परिवारिक पौराणिक कर्मकांड छोड कर आर्य समाज और ऋषि मिशन को समर्पित हो गये। उसके बाद पीछे मुड कर नही देखा और लगातार`वबपंस उमकपं और जमीनी स्तर पर वैदिक प्रचार प्रसार करने मे अग्रणी रहते है'

'समाजिक चिंतन-'

'**डॉ.** आर्य समाजिक रूप से एक महान समाज सेवक भी है। कुछ लोग बडी बडी बाते करते है लेकिन दया धर्म उनमे कुछ दिखाई नही देता है। लेकिन डह. आर्य ऐसे देव पुरूष है जो किसी गरीब जरूरतमंद जो वास्तव मे दान सहायता का सुपात्र है और उनके संज्ञान मे आ जाये तो वह हर सम्भव सहायता देते है। इसलिए **डॉ.** आर्य देव पुरूष है पता नही कितने ही लोगो को आर्थिक सहायता दी, मुझे इन्होने बताया था कि एक आर्य ने तो हर सहायता पाकर भी धोखा दिया और लडके को अपने नोएडा गुरुकुल मे पढ़ाया जो वैदिक प्रचार कर रहा है। इससे इनका यह मानवीय पक्ष सामने आता है। जो वास्तव मे इतना कोई भी किसी के लिए नही करता है। सही अर्थो मे धार्मिक वही होता है जो स्वयं समर्थ होने पर दूसरो को समर्थ बनाने के प्रयास करता है। जो स्वयं सुखी हो या न हो तो भी दूसरे को दुखी न देख सके, सबके दुख दूर करने कि मानवीय भावना अपनी आत्मा मे रखे। क्योकि जब दूसरे प्रति दया, संवेदना आदि गुण ही नही होंगे तो कोई धार्मिक कैसे हो सकता है तो यहां शुद्ध रूप मे सच्चे धार्मिक और सच्चे समाजिक व्यक्ति है।'

धार्मिक चिंतन-

डॉ. आर्य जब से आर्य समाजी वैदिक धर्मी हुए है तब से इनका आत्मिक अध्यात्म उन्नति तो कर ही रहे है दूसरो को भी वैसा बनाने कि बेहद प्रयास करते है। इसके लिए इन्होने कई पुस्तक लेखन किया है। इनका बच्चो के धार्मिक संस्कारों पर विशेष रूची और गम्भीरता है जिसके लिए इन्होने बच्चो को स्मरण करवाने वाले योग्य वाक्य लेख लिखा और मुझ से उसका ग्राफिक्स बनवाया और बिना उसका हानि लाभ देखे अपने से खर्च कर उसे हर जगह वितरित भी किया। यह होती है सच्ची भावना धार्मिक प्रचार कि भावना। इसके इलावा आर्य नित्य वैदिक संध्या उपासना, हवन यज्ञ नित्य कर्म के साथ अपनी आर्य समाज, गऊशाला, गुरूकूल आदि के कार्य भी देखते करते है।'

ईमानदार और स्पष्टवादिता-

डॉ. आर्य जितना जिस व्यक्ति बारे मानने योग सत्य है उतना ही मानते करते है। कहने का तात्पर्य है आर्यजगत् मे कोई कितना भी प्रसिध्दि प्राप्त हो यदि वह सिद्धान्तिक रूप से और स्वार्थवश कही गलत है तो **डॉ.** आर्य उसकी स्वार्थ और गलत सिद्धान्त और मंशा को आर्यजगत् के समझ रखने मे कभी पीछे नही हटते चाहे कोई उनके लाख विरोध करे, गाली दे, कुछ भी विरोध करे, वह समझोता नही करते है। उदाहरण के रूप मे बाबा राम देव और सत्पाल सांसद जैसे आर्य समाजीयो को जब से उन्होने देखा कि यह शिंव लिंग पूजा के पौराणिक कार्य मे शामिल होकर पौराणिक कर्म कांड किया तो इन्होने इस बात का डक कर विरोध किया। जिसके लिए तथाकथित हिन्दूवादी नामधारी आर्य इनको दिन रात कोसते रहते है लेकिन अपने सिद्धान्त और वचनों से समझोता नही करते और सैंकडों मे अकेले ही भीडते देखे जाते है। ऐसा नही है कि यह बाबा राम देव कि पूर्णता ही गलत मानते है इन्होने इनका बहुत प्रशन्सा भी बहुत करी है लेकिन वर्तमान मे बाबा रामदेव जी द्वारा वैदिक सिद्धान्तो से समझता कर अपनी स्वार्थ सिध्दि करना उनका खटकता है जिसका यह विरोध भी करते है। इसमे कोई गलत या पाप भी नही है। वैसे भी ऋषि अनुयायी तो वही होता है जो गलत को गलत

कहने लिखने कि दृढ शक्ति रखे और इसके लिए किसी से भी न डरे। सच कहूं तो इतना साहस आर्य जगत् मे किसी के पास भी कम ही देखने को मिलता है प्राय लोग आज वैदिक प्रचार मे भी पक्षपाती होकर काम कर रहे है, लेकिन डह्. आर्य जी को कोई स्वार्थ नही है। वह निर्भिक होकर अपना काम करते है।'

राजनीति चिंतन–

डॉ. आर्य जी राजनीति सिद्धान्तो से किसी भी पार्टी से कोई संबंध नही रखते है और कोई विशेष रूची भी इनकी राजनीति मे नही रही है। बल्कि यह तो योग्य उम्मीदवार, योग्य शासक होना अपना प्राथमिकता मे रखते है लेकिन वर्तमान मे मोदी सरकार के NPR, CAA, NRC के विरूद देश व्यापी अक्रोष फैलते देख और स्वामी अग्निवेश जी कि बीजेपी संघवादीयो द्वारा बार बार कि गई मारपीट देख कर, इनका ह्र्दय परिवर्तन हो गया। मानो राजनीति ने इनको भी बूरी तरह से प्रभावित कर दिया। इन्ही कारणो से इन्होने देश समाजहीत मे राजनीति चिंतन करना शुरू किया और अपना आक्रोश भी जाहिर किया। अब क्योकि **डॉ.** आर्य बहुत मानवीय है और थोडे सेल्यूलर भावना भी रखते है ताकि सभी को गलत न बना कर उनके साथ गलत न हो केवल गलत को गलत बोल कर ही न्याय धर्म का पालन हो। इसी विचार धारा को आगे रखते हुए और स्वामी अग्निवेश जी को प्रति सम्मान श्रद्धा रखते हुए कुछ लेख आदि प्रकाशित क्या किये और बीजेपी सरकार कि आलोचना क्या करी, कुछ हिन्दूवादी कट्टरपंथी नामधारी आर्य समाजी उनके पीछे पड गये, उनको मुल्ला कहने लग गये, गंदी अश्लील गालीया देने लगे। अब **डॉ.** आर्य जी ने आर्य समाज मो संघ कि घूसपेठ को भी कठोरता से उजागर किया और संघी आर्य समाजीयो को आईना दिखाया कि यह रास्ता गलत है यह ऋषि मार्ग नही है। मतलब यहा भी डह्. आर्य आर्य समाज और ऋषि दयानंद जी के सच्चे अनुयायी और चौकीदार कि तरह काम कर रहे है तो ऐसे मै कट्टरपंथी नामधारी हिन्दूवादी आर्य इनको कैसे पसन्द कर सकते है यही कारण है कि आज आर्य जगत् का बहुत बडा वर्ग जोकि हिन्दूवादी बीजेपी विचार धारा का प्रचारक है वह डह्. आर्य जी का घोर विरोधी है। जैसे स्वामी अग्निवेश जी को इनका तथाकथित आर्यो का सामना करना पडता है वैसे ही डह्. आर्य जी को इनका तथाकथित आर्यो का सामना करना पडता है। कभी कभी मुझे इनकी चिंता होने लगती है जिस बारे मैने इनको कई बार निजी वार्तालाप मे भी बोला है कि आप विद्रोही लोगो मे घीरे रहते है थोडा अपनी चिंता करे, देश का माहौल फिल्हाल ठीक नही है तथाकथित लोगो पर हिन्दूत्व का पागलपन सिर पर सवार है तब इनका एक ही जवाब मै डरने वाला नही हू जो भौंकता है वह भौंकता रहे इनका तो काम ही भौंकना है। हम अपना काम ईमानदारी से ऐसे ही जारी रखेंगे।'

समिक्षा–

डॉ. आर्य सच्चे अर्थो मे आर्य समाज के सच्चे सिपाही और ऋषि दयानंद के सच्चे अनुयायी है। सच्चे अर्थो मे बहुत उदारवादी, राष्ट्रवादी, ईमानदार, गम्भीर जाहरूक, चिंतन, लेखक और विचारक है। वैदिक सिद्धान्तों और नियमो से कभी समझोता नही करते है, बिना किसी स्वार्थ के अपने धार्मिक और समाजिक कार्य करते है। इनको किसी से व्यक्तिगत द्वेष नही है, किसी से नफरत नही है। पवित्र आत्मा रखते है, ईश्वर को साक्षी मानते है और यदि गलत को गलत कहने लिखने मे किन्ही लोगो को कष्ट होता है तो यह उनका व्यक्तिगत मामला है वह क्या कर सकते है अब उनकी तरह से तो वह स्वार्थी समझैतावादी बन नही सकते और न ही उनकी आत्मा उनको यह आज्ञा देती है। अब आप अपनी अंतरात्मा से और ईश्वर को साक्षी मान कर विचार करे क्या **डॉ.** आर्य जी का विरोध करने वाले तथाकथित आर्य या हिन्दूवादी लोग जरा सी भी मनुष्यता रखते है ? अथवा मनुष्य कहलाने के योग्य है ?'

---नरेश

मामचंद पथिक भजनोपदेशक को श्रद्धांजलि

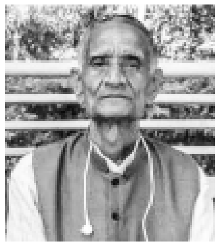

आर्य समाज के लोकप्रिय भजन गायक व आकाश वाणी सिंगर महाशय मामचंद पथिक का निधन

अपने मधुर भजनों व शास्त्रीय लोक गायन से लोकगीतों में रूचि रखनें वाले लाखों रेडियो श्रोताओं का मनोरंजन करने वाले महाशय मामचंद पथिक अब नही रहे, बुध वार सुबह ६:३० बजे उन्होंनें हरिद्वार के रूड़की में अंतिम सांस ली। लगभग पाच दशक तक सैंद्धातिक गायन व देश के बडे–बडे मंचो व आर्य समाज के मंचों पर अपनी स्वर लहरियां बिखरने वाले आर्य समाज के वयोवृद्ध भजनोपदेशक पं६ मामचंद पथिक जी का आज सुबह उनके हरिद्वार के रूड़की नगर स्थित शिवालिक विहार दिल्ली रोड़ निवास पर निधन हो गया। आकाशवाणी सिंगर के रूप में आकाशवाणी केंद्र हरिद्वार व नजीबाबाद आकाशवाणी से जुडें रहे महाशय मामचंद पथिक जी, ८६ वर्ष के थे और काफी दिन से अस्वस्थ चल रहें थें ।

आर्य समाज की विभिन्न संस्थाओं, आर्य समाज की अंतर्राष्ट्रीय संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व उत्तराखंड सहित अलग–अलग राज्यों के धार्मिक व समाजिक संगठनों ने पथिक जी के निधन पर गहरा दुख जताया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना की ओर से मामचन्द पथिक जी को विनम्र श्रद्धांजलि

-विठ्ठल राव आर्य, मंत्री सभा

पूज्य और बड़ा भाई :: भारत

सौजन्य : **राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी**

सन्घ १६२४ में जब गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर चीन गये थे तब वहाँ उनके स्वागत में एक विशाल सभा हुई थी ! ल्याँग ची चाव नाम के एक आचार्य ने चीनी-जन की ओर से उनका स्वागत-अभिनन्दन पत्र पढा था !

यह अभिनंदन-पत्र विश्वभारती में प्रकशित हुआ तथा उसका हिन्दी-अनुवाद फरवरी १६२५ की सरस्वती में प्रकाशित हुआ !

यह अभिननदन-पत्र ऐतिहासिक इसलिए है कि इसमें भारत के प्रति वहाँ के लोगों का उद्‌गार है !

ल्याँग ची चाव ने कहा कि ''अन्ध ी मनुष्य-पूजा में हमारा विश्वास नहीं है ! यह ठीक है कि यहाँ हम रवीन्द्रजी के स्वागत के लिए एकत्र हुए हैं किन्तु इसका कारण यह है कि आप उस पुण्यभूमि भारत के प्रतिनिधि हैं, जो हमारे देश का पूज्य और बड़ा भाई है ! आपको खुश करने के लिए हम भारत को पूज्य और बड़ा भाई नहीं कह रहे, हमारे पास इस कथन के ऐतिहासिक-प्रमाण हैं !''

''हमारा भूगोल इस प्रकार का है कि भूमध्य सागर के चारों ओर बसी हुई मानवजातियों से हमारा संपर्क नहीं हो सका था लेकिन हमारे ईशानकोण की सीमा पर भारत जैसा सभ्य और समृद्ध देश बसा हुआ है ! इसलिए भौगोलिक-दृष्टि से हम सगे भाई हैं ! मनुष्यता के गहन प्रश्नों को हल करने की दिशा में भारत हमसे आगे था, हम उसके छोटे भाई उसके पीछे !''

''प्रकृति देवी ने हम दोनों के बीच पहाड़ और जंगलों का परदा डाला हुआ था, इसलिए हम बहुत समय तक एक-दूसरे से अनजान बने रहे थे ! सम्राट अशोक ने कुछ भिक्षु बौद्ध-मत के प्रचार के लिए हमारे देश में भेजे थे ! चीन शे ह्वांग ने चीन की दीवाल बनवाई थी ! दन्तकथा है कि उस समय वे भिक्षु कैद किये गये और मार डाले गये ! लेकिन उसके बाद २४ हिन्दू विद्वान चीन आये और १८७ यात्री भारतवर्ष गये, जिनमेम से १०५ के नाम प्रसिद्ध हैं ! कुमारजीव, बुद्धिभद्र और जीनभद्र के नाम चीन में भी प्रसिद्ध हैं ! हम दोनों देश सत्य की खोज में थे क्योंकि हमें मानवजति का उद्धार करना था !''

''भारतवर्ष ने हमें निर्विकार-स्वतन्त्रता का ज्ञान दिया ! निर्विकार-प्रेम की दीक्षा दी ! प्राणिमात्र के प्रति शुद्ध प्रेम ! बौद्ध-धर्म की सात हजार पुस्तकों का सार यही है ! बौद्ध-भिक्षु हमारे महाराज के लिए बहुत सी मूर्तियाँ, पुस्तकें और चित्र भी लेकर आये थे और हमारे देश के जो यात्री भारत गये, वे भी अनेक पुस्तकों के अनुवाद के साथ भारत की कला, साहित्य और सामाजिक-संगठन का रूप लेकर यहाँ आये ! जिसका प्रभाव हमारे संगीत, चित्रकला और भवन-निर्माण-कला पर भी हुआ ! हमारे प्राचीनतम नाट्य का नाम पूटाओ है, खोज से मालूम हुआ कि यह नाम दक्षिण भारत के बाटो नाम के स्थान की कहानी से जुड़ा हुआ है ! ''अश्वघोष के द्वारा लिखित शाक्यमुनि की जीवनी और महायान-सूत्रों का हमारे साहित्य पर गहरा असर है ! अनेक भारतीय काव्यों का चीनी में अनुवाद हुआ है ! कन्फ्यूशियस और मेंशियस हमारे दार्शनिक थे किन्तु सभा एकत्र करने की प्रथा हमारे यहाँ भारत से ही आयी !''

''दुर्भाग्य से बहुत समय तक संसार में हमारी हँसी उड़ायी गयी, हमें धमकाया गया और हमारा निरादर और घृणा भी की गयी थी लेकिन हमं अपने सुकर्मों के अमरत्व पर विश्वास है, कन्फ्यूशियस की समाधि पर एक वृक्ष है और वसन्त में उस पर बारबार नवपल्लव जन्म लेते हैं, जीर्ण होने पर भी नये अंकुर ! उसी प्रकार हमें रवीन्द्र और गांधी के नश्वर शरीर में दो महानघ आत्माओं के दर्शन हो रहे हैं !''

''आज हम उसी भाव से रवीन्द्रबाबू का स्वागत कर रहे हैं, जिस भाव से लीयांग निवासियों ने शिमोदन का और लूसन-निवासियों ने शान्ति का स्वागत किया था !''

श्रद्धांजलि

महात्मा चौतन्य मुनि जी नहीं रहे

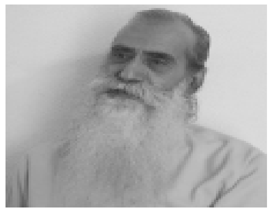

आर्य समाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, अनेक पुस्तकों के लेखक, उधमपुर, जम्मू कश्मीर और सुंदरनगर (मण्डी) हिमाचल प्रदेश स्थित अनेक वैदिक आश्रमों के संचालक व संस्थापक, महात्मा चौतन्यमुनि जी (हिमाचल प्रदेश) का निधन अचानक दिल का दौरा पड़ने से २६ जून, २०२० शुक्रवार की दोपहर को हो गया।

आपका आर्य कुमार सभा, किंग्सवे, दिल्ली से काफी पुराना संबंध रहा।

वर्तमान में महात्मा जी सुंदरपुर (मंडी) आश्रम, हिमाचल प्रदेश में ही थे, जो मंडी शहर से ८-१० Km दूर स्थित है। अन्तिम संस्कार मंडी, हिमाचल में ही किया गया।

उस पुण्य आत्मा को सादर नमन और भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि। - ओम सपरा उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल पंजीकृत, आर्य समाज, डह्क्टर मुखर्जी नगर, दिल्ली फोनः ६८ १८१८ ०६३२

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना की ओर से चैतन्यमुनि जी को विनम्र श्रद्धांजलि

-विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा

स्वामी धर्ममुनिजी को विनम्र श्रद्धांजलि

बहुत ही दुख के साथ सूचित किया जाता है कि आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि जी ने आज दोपहर को अपना नश्वर शरीर त्याग दिया आर्य जगत के लिए यह एक बहुत ही दुख का विषय है इतने बड़े सन्यासी हमारे बीच से चले गए !

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना की ओर से स्वामी धर्ममुनि जी को विनम्र श्रद्धांजलि

-विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा

प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए था। मैं हारू या जीतू मुझे कहना तो वही चाहिए जो सत्य है।

'पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय सार्वदेशिक सभा के मंत्री (१९४६-१९५१) होते हुए भी आर्य समाज को हिंदू कोड बिल के संदर्भ में अपने अनुकूल करने में असमर्थ रहे। उन्होंने समाज की तनातनी की परवाह न करते हुए माननीय डह्क्टर अंबेडकर जी के हिंदू कोड बिल के अनुकूल ही कई स्थानों पर व्याख्यान दिए। श्री उपाध्याय जी केअनुसार यह भ्रामक और राजनीतिक प्रचार था कि-हिंदू कोड बिलॉभाई बहन के विवाह (स गोत्रविवाह) को विहित ठहराता रहता है। १ तलाक चलाना चाहता है और २ पुत्रियों को जायदाद में हक हिंदुओं के पारिवारिक जीवन को नष्ट करना चाहता है।

'हमें इस बात की जानकारी नहीं है, माननीय अंबेडकर और पंगंगाप्रसाद उपाध्याय जी की कभी प्रत्येक भेंट हुई या नहीं, श्री उपाध्याय जी द्वारा लिखे १ अछूतो का प्रश्न, २ हिंदू जाति का भयंकर भ्रम, ३ दलित जातियां और नया प्रश्न, ४ हिंदुओं का हिंदुओं के साथ अन्याय, ५ डह्क्टर की धमकी आदि, सम सामयिक प्रचारार्थ लिखी गई लघु पुस्तिकाओ सम्भवतः इन सब बातों पर और अधिक प्रकाश पड़े। हिंदू कोड बिल के संदर्भ में श्री उपाध्याय जी ने बड़ी तीव्रता से यह अनुभव किया था कि सनातनी प्रवृत्तिआर्य समाज में प्रविष्ट हो चुकी है। इस मनोवृत्ति को सन् (१९२८) में ही डाक्टर अंबेडकर जी ने ताड लिया था और अपने एक लेख में लिखा था कि आज आर्य समाज को सनातन धर्म ने निगल लिया है।

Election Notification of

Arya Prathinidhi Sabha A.P.

(United A.P. i.e. A.P. & Telangana States)
Hyderabad, Telangana
(Sabha represents both States A.P. and Telangana)
Reg. No. 6/52 (Old), 1342 (New and amended)
D.No. 4-2-15, Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

Election to Arya Pratinidhi Sabha A.P.

General Body and managing committee meetings of Arya Pratinidhi Sabha A.P. -Telangana were held on 2nd February 2020 and 28th June 2020 respectively under the chairmanship of President Sri Thakur Laxman Singh ji and resolved unanimously to hold the election to Arya Pratinidhi Sabha A.P. -Telangana (united A.P.) on Sunday the 2nd August 2020.

Election to Arya Pratinidhi Sabha, A.P. -Telangana (united A.P.) will be held under the observer and election officership appointed by Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha 3/5, Asaf Ali Road, New Delhi. Notice will be sent to all delegates who have been elected and approved by Arya Pratinidhi Sabha on 28th June 2020.

Election Schedule : 1. Election date : Sunday 2-8-2020

2. Nomination time	:	10 a.m. to 12 noon
3. Scrutiny time	:	12-10 p.m. to 2 p.m.
4. Withdrawl time	:	2-30 p.m. to 4-30 p.m.
5. Polling if necessary	:	5-00 p.m. to 7-00 p.m.
6. Counting	:	7-05 p.m. till end

Results will be announced after completion of counting.

President Secretary

Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana

closed. Most people do not miss them! The tinkling of coins is no longer heard in sanctuaries, and that does not seem to upset gods. The communal nexus between religion and politics stands paralysed. Post-COVID, religion must be God-centred and priest-free, unburdened with places of worship. Worship, free from rituals, dogmas, deception and priestly hypocrisy, must nourish life. Worship must be to spiritual life what breathing is to physical life. Just as there are no middlemen in our breathing—except the deadly middleman of pollution—in the spiritual breathing of worship too, there must be no middlemen.

The emphasis must shift from salvation to social justice, from piety to peace, from rituals to human development, from divisive faith to universal love. Humanity must be free at last to recognise the God of justice who has no favourites or special agents.

This article first appeared in the print edition on June 30, 2020 under the title "Emancipated By Virus". Agnivesh is a Vedic scholar and social activist and Thampu was principal of St. Stephen's College, Delhi.

पागी–पागी !

फोटो में जो वृद्ध गड़रिया है वास्तव में ये सेना का सबसे बड़ा राजदार था पूरी पोस्ट पढ़ो इनके चरणों मे आपका सर अपने आप झुक जाएगा, २००८ फील्ड मार्शल' मानेक शहृ' वेलिंगटन अस्पताल, तमिलनाडु में भर्ती थे। गम्भीर अस्वस्थता तथा अर्धमूर्छा में वे एक नाम अक्सर लेते थे – "पागी–पागी !'' डाक्टरों ने एक दिन पूछ दिया Sir ! who is this Paagi !''

सैम साहब ने खुद ही इतपर्मा किया... १९७१ भारत युद्ध जीत चुका था, जनरल मानेक शहृ 'ढाका' में थे। आदेश दिया कि पागी को बुलवाओ, कपददमत आज उसके साथ करूँगा ! हेलिकहप्टर भेजा गया। हेलिकहप्टर पर सवार होते समय पागी की एक थैली नीचे रह गई, जिसे उठाने के लिए हेलिकहप्टर वापस उतारा गया था। अधिकारियों ने नियमानुसार हेलिकहप्टर में रखने से पहले थैली खोलकर देखी तो दंग रह गए, क्योंकि उसमें दो रोटी, प्याज तथा बेसन का एक पकवान (गाठिया) भर था। Dinner में एक रोटी सैम साहब ने खाई एवं दूसरी पागी ने।

'उत्तर गुजरात' के 'सुईगाँव' अन्तर्राष्ट्रीय सीमा क्षेत्र की एक border post को 'रणछोड़दास post' नाम दिया गया। यह पहली बार हुआ कि किसी आम आदमी के नाम पर सेना की कोई चवेज हो, साथ ही उनकी मूर्ति भी लगाई गई हो।

पागी यानी ''मार्गदर्शक'', वो व्यक्ति जो रेगिस्तान में रास्ता दिखाए। ''रणछोड़दास रबारी'' को जनरल सैम मानिक शहृ इसी नाम से बुलाते थे।

गुजरात के 'बनासकांठा' जिले के पाकिस्तान सीमा से सटे गाँव 'पेथापुर गथड़ों' के थे रणछोड़दास। भेड़, बकरी व ऊँट पालन का काम करते थे। जीवन में बदलाव तब आया जब उन्हें ५८ वर्ष की आयु में बनासकांठा के पुलिस अधीक्षक 'वनराज सिंह झाला' ने उन्हें पुलिस के मार्गदर्शक के रूप में रख लिया।

'हुनर इतना कि ऊँट के पैरों के निशान देखकर बता देते थे कि उस पर कितने आदमी सवार हैं। इन्सानी पैरों के निशान देखकर वजन से लेकर उम्र तक का अन्दाजा लगा लेते थे। कितनी देर पहले का निशान है तथा कितनी दूर तक गया होगा सब एकदम सटीक आँकलन जैसे कोई कम्प्यूटर गणना कर रहा हो।'

१९६५ युद्ध की आरम्भ में पाकिस्तान सेना ने भारत के गुजरात में 'कच्छ' सीमा स्थित 'विधकोट' पर कब्जा कर लिया, इस मुठभेड़ में लगभग १०० भारतीय सैनिक हत हो गये थे तथा भारतीय सेना की एक १०००० सैनिकोंवाली टुकड़ी को तीन दिन में 'छारकोट' पहुँचना आवश्यक था। तब आवश्यकता पड़ी थी पहली बार रणछोडदास पागी की! रेगिस्तानी रास्तों पर अपनी पकड़ की बदौलत उन्होंने सेना को तय समय से १२ घण्टे पहले मञ्जिल तक पहुँचा दिया था। सेना के मार्गदर्शन के लिए उन्हें सैम साहब ने खुद चुना था तथा सेना में एक विशेष पद सृजित किया गया था ''पागी'' अर्थात पग अथवा पैरों का जानकार।

भारतीय सीमा में छिपे १२०० पाकिस्तानी सैनिकों की सवबंजपवद तथा अनुमानित संख्या केवल उनके पदचिहों से पता कर भारतीय सेना को बता दी थी, तथा इतना काफी था भारतीय सेना के लिए वो मोर्चा जीतने के लिए।

१९७१ युद्ध में सेना के मार्गदर्शन के साथ–साथ अग्रिम मोर्चे तक गोला–बारूद पहुँचवाना भी पागी के काम का हिस्सा था। 'पाकिस्तान' के 'पालीनगर' शहर पर जो भारतीय तिरंगा फहरा था उस जीत में पागी की भूमिका अहम थी। सैम साब ने स्वयं Rs. 300 का नकद पुरस्कार अपनी जेब से दिया था।

पागी को तीन सम्मान भी मिले ६५ व ७१ युद्ध में उनके योगदान के लिए – 'संग्राम पदक, पुलिस पदक' व 'समर सेवा पदक'!

२७ जून २००८ को सैम मानिक शहृ की मृत्यु हुई तथा २००९ में पागी ने भी सेना से 'स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति' ले ली। तब पागी की उम्र १०८ वर्ष थी ! जी हाँ, आपने सही पढ़ा... १०८ वर्ष की उम्र में 'स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति'! सन् २०१३ में ११२ वर्ष की आयु में पागी का निधन हो गया।

आज भी वे गुजराती लोकगीतों का हिस्सा हैं। उनकी शौर्य गाथाएँ युगों तक गाई जाएँगी। अपनी देशभक्ति, वीरता, बहादुरी, त्याग, समर्पण तथा शालीनता के कारण भारतीय सैन्य इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो गए रणछोड़दास रबारी यानि हमारे 'पागी'।

चित्र उन्हीं का है।

साभार : आनन्द राज

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीव 03-07-2020 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ

To,

Election Notification / 405900

Date : 01-07-2020

Election Notification of

Arya Prathinidhi Sabha A.P.

(United A.P. i.e. A.P. & Telangana States)
Hyderabad, Telangana
(Sabha represents both States A.P. and Telangana)
Reg. No. 6/52 (Old), 1342 (New and amended)
D.No. 4-2-15, Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

Election to Arya Pratinidhi Sabha A.P.

General Body and managing committee meetings of Arya Pratinidhi Sabha A.P. -Telangana were held on 2nd February 2020 and 28th June 2020 respectively under the chairmanship of President Sri Thakur Laxman Singh ji and resolved unanimously to hold the election to Arya Pratinidhi Sabha A.P. -Telangana (united A.P.) on Sunday the 2nd August 2020.

Election to Arya Pratinidhi Sabha, A.P. -Telangana (united A.P.) will be held under the observer and election officership appointed by Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha 3/5, Asaf Ali Road, New Delhi. Notice will be sent to all delegates who have been elected and approved by Arya Pratinidhi Sabha on 28th June 2020.

Election Schedule :

1. Election date	:	Sunday 2-8-2020
2. Nomination time	:	10 a.m. to 12 noon
3. Scrutiny time	:	12-10 p.m. to 2 p.m.
4. Withdrawl time	:	2-30 p.m. to 4-30 p.m.
5. Polling if necessary	:	5-00 p.m. to 7-00 p.m.
6. Counting	:	7-05 p.m. till end

Results will be announced after completion of counting.

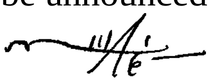

President
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana

Secretary
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, మంత్రి సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.